Journal Literary Aesthetics
Volume No: 13, Issue No: 1, Year: 2026 (January-June)
PP: 22-28
ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

# पंचानन मिश्र: बहुआयामी प्रतिभा संपन्न अक्षर पुरूष

**प्रवीण कुमार झा**

शोधार्थी, विश्विद्यालय मैथिली विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा

**प्रो. अशोक कुमार मेहता**

शोध पर्यवेक्षक, विश्विद्यालय मैथिली विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा

पंचानन मिश्र मैथिली भाषा-साहित्यक क्षेत्रमे एकटा चिन्हल-जानल नाम छथि। ओ मैथिली साहित्यक अन्वेषणात्मक प्रवृत्तिसँ युक्त लेखनक, विविध आयाम आ दृष्टि सँ परिपूर्ण मैथिलीक एक गोट धरोहरि साहित्यकारक रूपें अपन परिचिति बनौलनि। मैथिलीक हिनक बहुआयामी रचना सभ मिथिला आ मैथिली लेल सदैव संदर्भ लेखक रूपमे परिगणित अछि। ई गंभीर पढ़ाकू प्रवृत्तिक व्यक्ति छलाह आ जा धरि कोनो विषयक पूर्ण अध्ययन आ शोध, नहि कऽ लैत छलाह ताधरि ओहि विषय पर अपन लेखनी नहि चलबैत छलाह।

जीवन स्वयं में एकटा साधना थिक तथापि जीवन शाश्वत बना कऽ रखबाक साधनाक अपन फराके महत्व छैक। भौतिक सुखक प्रत्याशामे व्यस्त जीवनक क्रियाकलाप सँ ओत-प्रोत रहितहुँ किछु कर्मयोगी एहनो होइत छथि जे भौतिक सुखक संगहि सामाजिक जीवन केर सुखक प्रयलमे सामंजस्य बनौने रहबाक लेल दत्तचित्त रहल करैत छथि। प्रतिभा, व्युत्पत्ति ओ अभ्यासक धनीक एहन लोक अपन क्रियमाण कर्महि सँ सशक्त बनल रहैत छथि। सम्मान, यश, प्रतिष्ठा एहन लोकक हेतु भोग्य नहि होइत छनि। अपितु, एहन लोक श्रद्धा, आदर, स्नेह ओ सौजन्य मुक्त हस्तेन बिलहैत रहैत छथि। [1] स्वभावतः एहन लोकक कर्तृत्व सहजहिं सुयश प्राप्त करबाक अवसर भेटि जाइत छनि। एहने कर्तृत्व साधनाक धनीक छलाह-पंचानन मिश्र। [2] बिहार सरकारक अन्तर्गत श्रम-विभागमे श्रम निरीक्षक, वनमनखी, पूर्णियाँ सँ चाकरी आरंभ करैत रोसड़ा, झुमरी तिलैया, कोडरमा होइत श्रम अधीक्षक रूपमे राँची, हजारीबाग, सिमडेगा, रामगढ़, चतरा आ अंतमे कोडरमा सँ अवकाश ग्रहण कयलाह। मुदा, से तइयो मातृभाषा मैथिलीक प्रति तेना आबद्ध-निबद्ध छलाह जे मैथिलीक साहित्यिक गोष्ठी ओ विद्वत मंच सभ नहि मात्र, आजीवन साधिकार लोकक हृदयमे स्थान बनेने अपने वाचा-शाक्ति, स्पष्टवादिता, कपटहीनता, सांगठनिक क्षमता, जाति निपेक्षता, औदार्य ओ कर्मठता आदि गुणक बले बौद्धिक जगतमे ख्यातनामा वर्णन रहलाह। ओ एक गोट चमकैत नक्षत्र जकाँ प्रकाशित, प्रशंसित ओ चर्चित बनि गेलाह। तकर कारण ई जे ओ मैथिली साहित्यक एकटा नव दृष्टि प्रदान कयनिहार आ बहुविधवादी सर्जकक रूपमे दर्जनों पोथीक प्रणेता छलाह। ओ सरस्वतीक वरद पुत्र छलाह।

दरभंगा जिला मुख्यालय स्थित दरभंगा महाराजक किलासँ सटल महल्ला लालबागमे पंचानन मिश्रक जन्म 30 जनवरी 1952 कें भेलनि। तहिया हिनकर पिता पं गंगाधर मिश्र


© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

मारवाड़ी हाई स्कूलमे संस्कृत विषयक शिक्षक छलाह। हिनक लालन-पालनमे कोनो कमी नहि छलनि। मुदा, नेनामे पंचानन मिश्र शरीरसँ बहुत कमजोर रहैत छलाह। इहो कहल जाइत अछि जे ओ जन्म सँ लऽ 15 वर्षक अवस्था धरि बहुत बीमार रहैत छलाह। जाहिसँ हुनक बालकाल प्रभावित छल । जनेऊ कालमे हिनका चिकेन पॉक्स भयंकर रूपें भऽ गेल छल। एहि अवधिमे बहुत गोटे कोरोना काल जकाँ काल-कवलित भऽ गेल छलाह। चारू भर एकटा भय केर वातावरण कायम भऽ गेल छल। एहना स्थितिमे पंचानन मिश्रकें चेचक भेने बहुत डर आ चुनौतीक सामना करऽ पड़ल छलनि। बहुत मेहनति-सेवा-सुसुर्षा, वैद्य दवाई सँ नियंत्रण भऽ पाओल छल। हुनक ई चिकेन पॉक्स एहन भयंकर रूप धारण केने छल जे आजीवन हुनक मुँह पर अपन चेन्हासि छोड़ि देने छल। हिनक खुरदुरा मुखाकृति तत्कालीन चेचकक भयंकर प्रभावक सद्यः प्रमाण थिक।

पंचानन मिश्रक प्रारंभिक शिक्षा कोनो गुरुजी अथवा कोनो 'खानगी' विद्यालयमे नहि भेल। हुनक पिता गंगाधर मिश्र स्वयं प्रकांड विद्वान छलाह। ओ मारवाड़ी विद्यालयमे शिक्षक छलाह। गंगाधर बाबू स्वयं पंचानन मिश्रक प्रारंभिक शिक्षा घरहि पर प्रदान कयलनि। पंचानन मिश्रक बालपन अस्वस्थताक संग बीतल। तैं घरे पर हिनक शिक्षा प्राप्त करब एक पैघ कारण बनल। घरे पर पढ़ि प्रायः हिनक नामांकन छठा वर्गमे मारवाड़ी विद्यालयमे भेल। ओहिठाम सँ ओ मैट्रिक परीक्षोत्तीर्ण भेलाह। तदनन्तर आइ०ए० आ बी० ए० केर पढ़ाई सी० एम० कॉलेज, दरभंगा सँ पूर्ण कयलाह।

हिनक पिताजी कनेक बेसी संवेदनशील व्यक्ति छलाह। भावुक सेहो। इएह कारण जे बच्चाक तकतिआन क्रमे पंचानन मिश्र कें प्रथम तल, जाहिमे छठा कक्षाक वर्ग छल नहि जाय दैत छलथीन, जे ओ ऊपरसँ खसि पड़त, ओ नीचा तल मे चलि रहल सातवाँ वर्ग मे हुनका बैसा देल करथिन !

पंचानन मिश्रक पसिनक विषय छल-समाजशास्त्र। ओ समाज कँ बहुत लगसँ देखऽ चाहैत छलाह आ तें आजीवन ई लिप्सा बनल रहि गेल। तें ओ सी० एम० कॉलेज, दरभंगा सँ समाजशास्त्र विषयमे स्नातक प्रतिष्ठा उत्तीर्ण केलाह। तत्पश्चात एम०ए० (समाजशास्त्र) मे नामांकन करबोलनि। एहि अवधिमे ओ बिहार लोक सेवा आयोगमे देल प्रतियोगिता परीक्षामे उत्तीर्ण कऽ गेलाह आ श्रम निरीक्षक पद पर योगदान केलाह।

हुनक अर्धांगिनी श्रीमती रेवती मिश्र अपन साक्षात्कार क्रममे बतोलीह जे पंचा बाबू एम०ए० प्रथम पत्रक परीक्षा देने छलाह। दोसर पत्रक परीक्षा नहि दऽ सकलाह कारण ओ तावत चाकरीमे चलि गेलाह आ दोसर पत्रक परीक्षा लेल संभवतः अनुमति नहि भेटलनि। ओ छुट्टीक आवेदन देने रहथिन। चाकरीमे भारी काजक दवाब केर कारणे हुनक परीक्षा छुटि गेलनि। एहि बातक जनतब हमरा तखन भेल जखन हुनक हाथक लिखल एकटा आवदेन चिट्ठाक पूर्जा हमरा आलमारीमे भेटल।

पंचानन मिश्रक विवाह सन 1977 ई० मे भेलनि। हिनर पत्नी निष्णात विदुषी श्रीमती रेवती मिश्र छथि। रेवती मिश्रक नैहर मधुबनी जिलाक विद्वत गाम गजहारा छनि। हिनक पिता स्वनामधन्य डॉ० जयकांत मिश्रक कृतित्व ओ व्यक्तित्वक छाहरि तर मैथिली भाषा


© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

साहित्यक क्रमबद्ध अध्ययन, अध्यापन एवं अनुसंधान, मध्यकालीन दुर्लभ मैथिली नाट्य साहित्यक उद्धार, मैथिली संस्थानिक मान्यता, मैथिलीक न्यायालयीय निर्देशन, मैथिलीक राष्ट्रीय ओ वैश्विक परिचिति, मैथिली शब्दकोशक सर्वथा नव ढ़व मैथिली आंदोलनक अग्रगामी धाप आदिक संगहि संस्कृत, अंग्रेजी आ हिन्दीक अतिरिक्त एकदम फराक विद्या इतिहास सेहो नव बाट तकलक, नव ऊर्जा पौलक, नव कथा कहलक। नवीनताक सूत्रधारे ओ छलाह। [3]

तें विद्वान मनीषीक पुत्री रेवती मिश्र कँ विदुषी होयब अस्वाभाविक नहि। ओ कतोक पोथीक रचनाकार स्वयं छथि आ अपन पति स्व० पंचानन मिश्रक सारस्वत साधनामे अर्द्धांगिनीक रूपमे परम सहयोगी होइत रहलीह अछि। हुनक संस्मरण सहित कतोक पोथी छनि, जाहि मे डॉ० जयकांत मिश्रक रचित "Folk Literature of the Maithili Language केर मैथिली में अनुवाद छनि । जाहि लेल हुनका साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार देल गेल छनि ।

विवाहक क्रमे ई उल्लेखनीय अछि जे पंचानन मिश्रक विवाह गजहारा निवासी स्वनामधन्य डॉ० जयकांत मिश्रक सुपुत्री श्रीमती रेवती मिश्र सँ ठीक भेलनि। बरियाती गजहारा गेल। विवाह सुसंपन्न भेल, मुदा बरियातीमे पिता गंगाधर मिश्र नहि गेलाह। ई कहब आवश्यक अछि जे गंगाधर मिश्र किनकहु बरियाती नहि जाइत छलाह। ओ अन्यत्र अन्न जल ग्रहण नहि करैत छलाह। पंडित रहथि। जँ कोनो पुत्रियो ओहिठाम जाए पड़ैत छलनि तऽ हुनको ओहिठाम अन्न जल ग्रहण नहि करैत छलाह। पिंडारूच अपन पुत्री ओहिठाम गेल छलाह मुदा चोट्टे बिना अन्न जल ग्रहण कयने घुड़ि गेल छलाह ।

पंचानन मिश्र स्नातके केलाक बाद बिहार लोक सेवा आयोगक प्रतियोगिता परीक्षा देलाह। एहि परीक्षा मे उत्तीर्णोपश्चात श्रम- निरीक्षक रूपमे प्रथम योगदान 1977 ई० मे वनमनखी, पूर्णिया मे देलखिन । तत्पश्चात रोसड़ा, झूमरी तिलैया, कोडरमा मे अपन सेवा देलथिन । हिनक पदोन्नति श्रम-अधीक्षक रूप मे भेलनि आ कोडरमा, गुमला, हजारीबाग होइत फेर कोडरमा आबि एहिठाम सँ सेवानिवृत्त भेलाह। अपन चाकरी जीवन मे सेहो समाज सेवाक संग साहित्य सेवा मे लागल रहलाह। गामक गरीब-मजदूर-विपन्न असहाय केर प्रति हुनक संवेदना बेसी प्रबल रहैत छलनि। इएह कारण अछि जे सेवानिवृत्तिक बादो हुनकर लोकप्रियता बरकारार छल। गोलोकवासी भेलाक बाद तऽ हुनक प्रति संवेदना व्यक्त करऽ बलाक समूह ठाढ़ भऽ गेल जे सोशल मीडियाक माध्यमे परिवार कें प्राप्त भेल ।

'साहित्य' एकटा व्यापक शब्द अछि । 'साहित्योभार्वः साहित्यम्' । शब्द एवं अर्थक सहभाव सँ समन्वित विघा साहित्य कहबैत अछि । [4] साहित्य जीवनक व्याख्या अछि। [5] साहित्य ओ संगीत अछि जे मानवक अंतः स्थल सँ मात्र एहि कारणें निस्तृत होइत अछि जे ओ भाषाक माध्यम सँ जीवनक संग अपन सांमजस्य स्थापित कऽ सकय । [6] साहित्यक एक मात्र लक्ष्य अछि असामन्जस्य मे सामंजस्य आनब, कल्पना कें


© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

वास्तविकता मे आ वास्तविकता कें काल्पनिक रंग पेटी मे रंगब, शिव के सुन्दर रूप मे सुन्दर कें शिव रूप मे उपस्थित करब, आदर्श ओ यथार्थ कें सुसंगत कस्टब । [7]

उपरोक्त परिप्रेक्ष्यमे पंचानन मिश्र जी कें साहित्य सँ तहिये लगाव भेल जहिया ओ इन्टर केर छात्र छलाह। हुनकर पहिल रचना 'मिथिला मिहिर' मे वर्ष 1970-71 मे छपल छलनि, मिथिला मिहिरमे हुनक आवरण आलेख अमेरिकी जनमत आ बंगालादेश 30 जनवरी 1972 ई० मे प्रकाशित भेलनि। जहिया ओ इन्टरक छात्र छलाह, हुनक लगाव गामक लोक, गामक कंठ साहित्य, गामक रहन-सहन, गामक संस्कृति, गामक वंचित ओ पिछड़ल समाज सँ बेसी छलनि। हुनक छोट भाइ श्री गजानन मिश्र एक साक्षात्कारमे जनतब देलनि, जे जहिया हम पूर्णियाँमे अंचल अधिकारी रूपमे कार्यरत रही तहिया ओ हमरा लग एलाह। प्रखंडमे जीप गाड़ी बी०डी०ओ० के नाम भेटैत छल। हमर सवारी स्कूटर छल। ओ रणुजीक गाम चलऽ लेल कहलाह। विदा भेलहुँ। स्कूटर केर ओ पाछाँ सीट पर बैसि गेलाह। भरि बाट गाम, नदी, पाखरि लोक कें देखैत एतद् सम्बंधी प्रश्न करैत गेलाह आ ई कहैत गेलाह जे तों गाम सँ जुड़ल छह, एहि ठामक जे नव वस्तु सोझा आबय तकर खोज करह। पहिने की रहेक? एखन की छैक? पहिलुक वस्तु किएक बदलल? खेती-बाड़ी, कालक गाछी, पटौनी व्यवस्था आदि। छोट-छोट बात, छोट-छोट समस्या पर बेसी हुनकर नजरि छलनि ।

ओ जिज्ञासु प्रवृतिक व्यक्ति जखन फणीश्वर नाथ रेणुजीक ओहिठाम हिंगना औराही गेलाह तऽ रेणु जी हिनका संग पटिआ पर बैसि बहुत रास प्रश्नक समाधान करैत रहलाह। तखनहि सँ भाइजीक प्रवेश साहित्य मध्य भेल, ई हमर अनुमान अछि। इएह कारण अछि जे हुनक साहित्यक मूलाधार मैथिली साहित्यक अन्वेषणात्मक प्रवृत्ति सँ युक्त अछि। इएह हुनक लेखनक विविध आयामक विस्तार ओ दृष्टि से परिपूर्ण होयब, एकर प्रमाण थिक ।

आजूक तिथिमे पंचानन मिश्रक मैथिली, अंग्रेजी ओ हिन्दी मे आठ मौलिक ओ बारह संकलित-संपादित पुस्तक प्रकाशित अछि आ कतोक अप्रकाशित सामग्री पड़ल रहि गेल अछि। कतोक यंत्रस्थ रहि गेल। जीवनक अंतिम काल धरि ओ अनवरत साहित्य-साधनारत रहलाह।

सन् 1986 ई० में पंचानन मिश्र श्रम विभागमे सरकारी सेवा पाबि कोडरमा गेलाह तऽ झुमरी तिलैया के भादोडीह मोहल्ला मे भाड़ाक खपड़ा घरमे रहि अपन सरकारी दायित्वक संग-संग मैथिली सेवा कार्य प्रारंभ केलनि। सर्वप्रथम ओहिठाम मैथिली भाषा-भाषी कें एकत्र कऽ मैथिली संस्था मिथिला मण्डल, झुमरी तिलैयाक गठन 1988 ई० मे करबौलनि आ ओहि संस्थाक माध्यमे पहिले बेर 1988 ई० मे विद्यापति स्मृति पर्व समारोहक भव्य आयोजन कयल गेल। संस्था द्वारा हिनकहि संपादकत्वमे 'तमौहा' नाम सँ स्मारिका प्रकाशन होमऽ लगाल। एहि संस्थाक संस्थापक सचिवक रूप मे पंचानन मिश्र अनेकहु ठाम कोडरमाक मैथिली भाषीक प्रतिनिधित्व केलनि तथा मैथिलीक अन्तराष्ट्रीय सम्मेलनमे अनेकहु बेर मिथिला मण्डल, झुमरी तिलैया केर प्रतिवेदन प्रस्तुत


© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

केलनि। एहि क्रममे 8-9 जनवरी, 2000 ई० मे आयोजित सातम अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, जमशेदपुरमे अपन विद्वान ससुर डॉ० जयकांत मिश्रक संग पंचानन मिश्र आयल छलाह। [8]

कोडरमा स्थित अपन आवासमे एकटा छोट छिन टेबुल-कुर्सी पर पंचानन मिश्र अपन साहित्य सृजन करैत छलाह। ओ अनवरत लिखते रहलाह। ओ अपन मूल नाम पंचानन मिश्रक अतिरिक्त आभिनव, प्रतीक आ आशूजानंद सन किछु छद्म नाम सँ सेहो लेखन कार्य करैत छलाह। हुनक पत्नी श्रीमती रेवती मिश्र हुनका मिनजी अर्थात मिश्र जी नामें सेहो सम्बोधित करैत रहलखिन्ह। [9]

पंचानन मिश्र कें मैथिलीक होरायल-भोतिआयल नायक सभक जीवनी लिखबामे खूब मोन लगैत छलनि। सामग्री जुटेबाक हेतु ओ नानाविध यत्न करथि। विभागीय काजक दबाब रहितहु छुट्टीलऽ कऽ साहित्य-मनीषी सभक जीवनी सम्बन्धी सामग्री जुटेबाक लेल निरंतर यत्न करथि। अनुसंधान मूलक काज हुनका बेसी पसिन्न छलनि। हिनक कोनहुटा पोथी, एकटा गंभीर शोध प्रज्ञक रूपमे प्रस्तुत अछि। हिनक कृति सभमे लोक चेतनाक विशद अध्येताक परिचिति भेटैत अछि। हिनक यात्रा संस्मरण तेहने मौलिक अनुसंधान केर परिचय दैत अछि। कतबो उस्सठ विषय किएक ने हो, अपन मोहक भाषा-शैली सँ ओकरा जीवन्त बना देबाक अद्‌भुत कौशल हिनकामे छलनि। मिथिला सँ सम्बन्धित पुरातत्व आ इतिहासक लेखनक संग-संग सामाजिक सांस्कृतिक विषय पर गंभीर लेखन करबा में हिनक जोड़ नहि छल ।

पंचानन मिश्र लेखन संग सम्पादन कलामे सेहो निष्णात छलाह। म०म० डॉ० उमेश मिश्र अभिभाषण समग्र, उमेश मिश्र रचना-संचयन, डॉ० अमरनाथ झाक डायरी, डॉ० जयकांत मिश्रक साक्षात्कार, जॉर्ज अब्राहन ग्रियर्स मैथिली रचना संचयन, नमामि गंगे, कोसी गीत, पं० ब्रजमोहन ठाकुरक डायरी, मैथिली लगनी सहित बागमती दामोदर टाइम्स, तमौहा स्मारिका आदि पत्रिका-स्मारिकाक ओ कुशल संपादन कयलनि अछि ।

पंचानन मिश्र कें भेटल पुरस्कार ओ सम्मानक जँ चर्च करी तऽ ओ अपन कर्म आ लेखनीक बलें नेनहि सँ कतोक सम्मान ओ पुरस्कार प्राप्त करैत रहलाह। 'मिथिला विभूति', 'मिथिला रत्न', शेखर सम्मान, त्रिवणीकांत ठाकुर साहित्य सम्मान सहित कतोक सम्मान ओ पुरस्कार सँ पुरस्कृत भेलाह।

पंचानन मिश्र सृजन कर्म संग बाल्येकाल सँ बहुतो संस्था सँ सम्बद्ध रहलाह। हिनकामे संस्थागत सांगठनिक क्षमता अनायासे रहल अछि। ओ संगठन आ अनुप्रेरित कलामे निपुण छलाह। हिनकर प्रेरणीय कला बेजोड़ छलनि। विभिन्न आयोजन-प्रयोजनमे हिनका जीवन पर्यंत अग्रणी भूमिका निमहैत देखल जाइत रहल। ओ मैथिली साहित्य परिषद, इलाहाबादमे अपन सक्रियता रखैत छलाह। लक्ष्मीश्वर पब्लिक लाइब्रेरीमे नित्य जुड़ाव छलनि। ओ अखबार, पत्रिका, पुस्तक आदि केर नियमित पाठक छलाह। ओ प्रयाग स्थित मिथिला सांस्कृतिक संगम आ अखिल भारतीय समितिमे अपन महती भूमिकाक निर्वहन करैत रहैत छलाह।


© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

मनुष्य जेना स्वभाव सँ अनुकरण केर प्रवृत्ति रखैत अछि। अपन रंग सँ भरल तुलिका सँ, चित्रकार जन भावनाक अभिव्यक्ति करैत अछि जाहि सँ दर्शक हतप्रभ रहि जाइत अछि। ओ चित्रकला शिल्प कलाक सेहो सोपान चढ़लनि। लोक कलाक सुगंध आइयो प्राचीन परंपरा सँ समृद्ध अछि। पंचानन मिश्र, उपेन्द्र महारथी केर कला सँ बेसी प्रभावित रहैत छलाह। सिकी कला सेहो हिनका मोहित करैत छलनि।

भारतीय साहित्य केर विकास लेल सक्रिय कार्य करऽ बला राष्ट्रीय संस्था साहित्य अकादमी सँ सेहो हुनक जीवन पर्यंत जुड़ाव बनल रहल। ओ डॉ० वीणा ठाकुर केर संयोजकत्वमे बनल मैथिली परामर्श मंडलक मुखर सदस्यक रूपमे अपन भूमिकाक निर्वहन केलनि। सुदूर देहातमे राष्ट्रीय सेमिनार, आन भाषा सभसँ मैथिली आ मैथिली सँ आन भाषामे अनुवाद, नव-नव साहित्यकार कें खोजि-खोजि अकादेमीक माध्यमे काज करावएब, सम्मेलन, सेमिनार, गोष्ठी, प्रदर्शनी कराएब हिनक उपलब्धि रहलनि। हिनका सभक परामर्श मैथिलीक बहुतोक पोथीक प्रकाशन ओ पुनर्प्रकाशन भऽ सकल ।

साहित्यिक यात्रा करब, छोट-छोट बात पर विशेष ध्यान देब, घर-परिवार सँ संपर्क राखब, अंतर्मुखी आ समूहमे चर्चा बेसी करब हिनक अभिरूचिमे विशेष रूप सँ शामिल छल। किताब पढ़ब आ ओहि पर एक चिट्ठा राखि देब जे एहि संदर्भमे आगाँ की करबाक अछि, जे योजना बनाएब, पावनि-तिहारमे अपन परंपरा संस्कृति सँ बेसी लगाव राखब, छठि चौरचन पावनिक प्रमुखता देब, एहिमे बच्चा सभक भागीदारी सुनिश्चित करायब, शिवक चारू पहर पूजा करब, शिवरातिमे अनिवार्य रूप सँ घर आयब, बरखी कर्मक प्रधानता देव आदिक प्रति सेहो बेसी अभिरूचि छलनि। आ सभ सँ बेसी अभिरूचि ई छलनि जे जँ कियो कोनो योग्यताधारी हिनका लग आबि जाइथ तऽ ओ हुनका हतोत्साहित नहि, अपितु उत्साहित करैत रहैत छलाह। ई गुण सर्वोपरि छलनि। हाथ पकड़ि भट्ठा धरायब, जकाँ नव-नव लोक कें साहित्यक प्रति अभिरूचि आ लेखन भाव जगबऽ मे हुनका खूब आनंदानुभूति होइत छलनि ।

ईएह कारण छल जे परिवारक करीब 6-7 व्यक्ति हुनक सान्निध्यमे लेखन-कार्य शुरू कयने रहथि, से हिनक असामयिक निधन सँ हुनका सभक लेखन कार्य ठमकि गेलैक अछि, जे साहित्य सहित व्यक्तिगत पैघ क्षति मानल जा सकैत अछि।

लोक चेतनाक विशद अध्येता पंचानन मिश्र, 26 अगस्त 2020 ई० क भोर में दरभंगा मेडिकल कॉलेज आ अस्पताल, दरभंगामे एहि धरा-धाम कें छोड़ि गोलोकवासी भऽ गेलाह। एहि संग मैथिलीक सभ विधा पर कलम चलौनिहार पंचानन मिश्रक लेखनी रुकि गेलनि आ ठमकि गेलनि मैथिलीक साहित्यक उन्नयनार्थ हुनक मैथिली गतिविधि। तथापि ई स्पष्ट अछि जे हिनक कृतित्व आ व्यक्तित्व चिरकाल धरि मैथिल-मानस कें झकझोरैत रहत, आलोकित-विलोकित करैत रहत आ प्रेरणा पुरूषक रूपमे सहृदय लोक हुनका पूजैत रहितहि, परवर्ती पीढ़ी अनुप्राणित होइत रहत ।


© Copyright @ Authors

ISSN: 2347-8705
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 5.8)
Journal Website www.literaryjournal.org

## संदर्भ-

1. अर्पण- अंक 38, वर्ष 2021 संपादक- डॉ० महेन्द्र नारायण राम, आलेखः 'अनुसंधानात्मक लेखन-शैली केर प्रणेता रहथि पंचाबाबू' : प्रवीण कुमार झा, पृ 126 प्रकाशन । विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा।
2. वएह पृ० 126
3. भारतीय साहित्यक निर्माताः जयकांत मिश्रः पंचानन मिश्र, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, वर्ष- 2016, पृ० 7
4. राजशेखर : काण्य मीमांसा, पृ० 5
5. Methew Arnold.
6. M.G. Bhat: Loterature and Literary Criticism.
7. आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' : प्रतिपादक भूमिका, पृ० 9
8. अर्पण- अंक-38, वर्ष 2021, प्रकाशक विद्यापति सेवा संस्थान, सम्पादक- डॉ० महेन्द्र नारायण राम, आलेख कर्ताः रवीन्द्र कुमार चौधरी, पृ० 89
9. वएह, पृ० 90


© Copyright @ Authors